INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 1 | FEBRUARY – 2026

# ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों पर ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन

प्रिया सिंह
शोधार्थी, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छ.ग.)

डॉ. सुषमा पाण्डेय
सहा. प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)
महर्षि यूनिवर्सिटी ऑॅफ मैनेजमेंट एण्ड टेक्नोलॉजी, बिलासपुर (छ.ग.)

## सारांश

ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा लंबे समय से कई चुनौतियों का सामना करती रही है, जैसे शिक्षक की कमी, स्कूल की अपर्याप्त सुविधाएँ और छात्रों की आर्थिक समस्याएँ। डिजिटल तकनीक और इंटरनेट के विकास ने इन चुनौतियों का एक संभावित समाधान प्रस्तुत किया है। ऑनलाइन शिक्षण ने ग्रामीण छात्रों को घर बैठे ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया है। इसके माध्यम से छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों में सुधार, आत्मनिर्भर अध्ययन की प्रवृत्ति और डिजिटल साक्षरता में वृद्धि हुई है। ऑनलाइन शिक्षा ने समय और स्थान की स्वतंत्रता दी है, जिससे छात्रों को अपनी सुविधा अनुसार अध्ययन करने का अवसर मिलता है। रिकॉर्डेड लेक्चर, वीडियो ट्यूटोरियल और ई–पाठ्य सामग्री ने सीखने की प्रक्रिया को अधिक लचीला और रुचिकर बनाया है। साथ ही, यह ग्रामीण छात्रों को शहरों और महानगरों के छात्रों के बराबर अवसर प्रदान करता है।

हालांकि, इसके साथ कई समस्याएँ भी सामने आई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कमजोर इंटरनेट, बिजली की अनियमित आपूर्ति, उपकरणों की कमी और तकनीकी साक्षरता की कमी ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव को सीमित करती हैं। इसके अलावा, छात्रों और शिक्षकों के बीच प्रत्यक्ष संवाद की कमी, ध्यान की समस्या और सामाजिक कौशल के विकास में बाधा जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न होती हैं।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षण ने शिक्षा के अवसर बढ़ाए हैं और तकनीकी साक्षरता को प्रोत्साहित किया है, लेकिन इसके पूर्ण लाभ के लिए अवसंरचना सुधार, प्रशिक्षण और नीति निर्माण आवश्यक हैं। यदि इन उपायों को अपनाया जाए, तो ऑनलाइन शिक्षण ग्रामीण शिक्षा को समावेशी और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

**बीज शब्द :** ग्रामीण शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षण, डिजिटल शिक्षा, तकनीकी साक्षरता, शैक्षणिक प्रभाव, डिजिटल विभाजन, छात्रों का प्रदर्शन, ई–शिक्षा उपकरण, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव, चुनौतियाँ और संभावनाएँ।

## प्रस्तावना

वर्तमान युग को ज्ञान और सूचना का युग कहा जाता है। तकनीकी और डिजिटल क्रांति ने हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है, और शिक्षा इसका सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। पिछले कुछ दशकों में शिक्षा का स्वरूप पारंपरिक कक्षाओं से ऑनलाइन माध्यमों की ओर तेजी से बदल गया है। विशेष रूप से कोविड–19 महामारी के दौरान स्कूल और कॉलेज बंद होने के कारण ऑनलाइन शिक्षण ने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी आवश्यकता और महत्व को सिद्ध किया। ऑनलाइन शिक्षण ने न केवल शहरों में, बल्कि ग्रामीण और

दूरदराज के क्षेत्रों में भी छात्रों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने का एक नया रास्ता प्रस्तुत किया है।ग्रामीण क्षेत्र की शिक्षा प्रणाली पर लंबे समय से कई चुनौतियाँ रही हैं। इनमें शिक्षक की कमी, उचित पाठ्य सामग्री का अभाव, स्कूलों की भौतिक सुविधाओं की कमी और छात्रों की आर्थिक समस्याएँ प्रमुख हैं। इस संदर्भ में ऑनलाइन शिक्षण ग्रामीण शिक्षा के लिए एक संभावित समाधान के रूप में उभरा है। डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट की सहायता से विद्यार्थी अब घर बैठे ही विभिन्न विषयों में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इससे शिक्षा की पहुँच बढ़ी है और छात्रों को आधुनिक तकनीकी ज्ञान भी प्राप्त हुआ है।

ऑनलाइन शिक्षण की प्रक्रिया केवल शिक्षा के वितरण को ही आसान नहीं बनाती, बल्कि छात्रों में आत्मनिर्भर अध्ययन, समय प्रबंधन और तकनीकी कौशल विकसित करने में भी सहायक होती है। रिकॉर्डेड लेक्चर, ई–लाइब्रेरी, वीडियो ट्यूटोरियल और डिजिटल असेसमेंट जैसी सुविधाएँ छात्रों को उनकी गति और सुविधा अनुसार अध्ययन करने का अवसर देती हैं। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण छात्रों को शहरों और महानगरों के छात्रों के समान अवसर प्राप्त होने लगे हैं।

हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षण के विस्तार के साथ कई समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या, स्मार्टफोन या कंप्यूटर की उपलब्धता, नियमित बिजली की कमी, और छात्रों का तकनीकी साक्षरता का स्तर इन समस्याओं में शामिल हैं।

इसके अलावा ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षक और छात्र के बीच प्रत्यक्ष संवाद की कमी होती है, जिससे छात्र कभी–कभी विषय को पूरी तरह समझ नहीं पाते। घर का वातावरण भी हमेशा पढ़ाई के अनुकूल नहीं होता, जिससे एकाग्रता की समस्या उत्पन्न होती है। इन सभी कारणों से यह आवश्यक हो जाता है कि ऑनलाइन शिक्षा के लाभ और चुनौतियों का व्यापक अध्ययन किया जाए।

ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण का प्रभाव केवल शैक्षणिक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी दिखाई देता है। लंबे समय तक स्क्रीन के सामने रहने से बच्चों में आँखों और स्वास्थ्य संबंधित समस्याएँ बढ़ सकती हैं। साथ ही, ऑनलाइन कक्षाओं में सहपाठियों और शिक्षकों के साथ सामूहिक गतिविधियों की कमी के कारण सामाजिक कौशल और समूह कार्य की क्षमता पर भी प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार, ऑनलाइन शिक्षण का प्रभाव बहुआयामी है और इसे समग्र दृष्टिकोण से समझना आवश्यक है।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन यह पता लगाने का प्रयास करेगा कि ऑनलाइन शिक्षा ने ग्रामीण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों, सीखने की प्रवृत्ति, डिजिटल साक्षरता, और सामाजिक व्यवहार पर क्या असर डाला है। साथ ही, अध्ययन में यह भी विश्लेषित किया जाएगा कि ऑनलाइन शिक्षण से जुड़ी कौन–कौन सी समस्याएँ सबसे अधिक प्रकट हुई हैं और उनके समाधान के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं।

ग्रामीण शिक्षा और ऑनलाइन शिक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना समाज और राष्ट्र की शैक्षणिक प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि उचित नीतियाँ बनाई जाएँ और तकनीकी अवसंरचना विकसित की जाए, तो ऑनलाइन शिक्षण ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने में एक शक्तिशाली माध्यम बन सकता है। इसके माध्यम से शिक्षा का लोकतंत्रीकरण संभव हो सकता है, जिससे सभी बच्चों को समान अवसर प्राप्त होंगे और वे अपने जीवन में सफलता के नए आयाम स्थापित कर पाएंगे।

इस प्रकार, यह अध्ययन ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण के लाभ, चुनौतियाँ और संभावनाओं का समग्र चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा। यह न केवल शिक्षा के क्षेत्र में शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि नीति निर्धारकों, शिक्षकों और समाज के लिए भी उपयोगी परिणाम प्रदान कर सकता है।

## समस्या कथनः–

''ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों पर ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन''

## उद्देश्यः–

ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं पर ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

## परिकल्पनाः–

**$H0_1$-** ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं पर ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

## संक्रियात्मक चरों का परिभाषीकरण :–

### ग्रामीण क्षेत्र

"ग्रामीण" शब्द का संबंध गाँव या देहात से होता है। ग्रामीण क्षेत्र वे होते हैं जहाँ जनसंख्या कम होती है, जीवन की गति धीमी होती है और लोग अधिकतर कृषि, पशुपालन या अन्य पारंपरिक व्यवसायों में संलग्न रहते हैं। ग्रामीण क्षेत्र शहरों के विपरीत प्राकृतिक वातावरण और खुले स्थानों से परिपूर्ण होते हैं। यहाँ जीवन सरल और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर होता है। ग्रामीण समाज में लोग एक–दूसरे के बहुत करीब रहते हैं। परिवार और समुदाय के मूल्य अधिक महत्व रखते हैं। यहाँ की सामाजिक संरचना परंपरागत होती है और रीति–रिवाजों का पालन किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुँच शहरों की तुलना में कम होती है। लोग मुख्यतः कृषि जैसे गतिविधियों पर निर्भर रहते हैं। इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्र प्राकृतिक सुंदरता, हरियाली, नदियाँ, जंगल और खेतों के लिए प्रसिद्ध होते हैं।

ग्रामीण जीवन की विशेषता इसकी शांति और प्राकृतिकता है। यहाँ लोग जीविका के लिए सीधे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हैं। भोजन, पहनावा, और आवास आदि में स्थानीय संसाधनों का योगदान होता है। ग्रामीण जीवन में परंपराओं, त्यौहारों और सांस्कृतिक गतिविधियों का महत्व बहुत अधिक होता है। गाँवों में लोग सरल और सामुदायिक जीवन जीते हैं, जहाँ आपसी सहयोग और सामाजिक मेलजोल प्रमुख होते हैं।

हालांकि, आधुनिक समय में ग्रामीण जीवन में भी बदलाव आया है। अब गाँवों में आधुनिक सुविधाएँ जैसे बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य केंद्र और इंटरनेट जैसी सुविधाएँ धीरे–धीरे पहुँच रही हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के अलावा छोटे उद्योग, हस्तशिल्प और सेवाओं का योगदान भी बढ़ा है। ग्रामीण क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि यहाँ की कृषि उत्पादन और प्राकृतिक संसाधन देश की जरूरतों को पूरा करते हैं। ग्रामीण जीवन हमें प्रकृति के करीब लाता है और सरल जीवन जीने की सीख देता है। यह जीवनशैली हमें संतोष, सहयोग और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की महत्वता समझाती है।

### शिक्षण

शिक्षण का अर्थ है किसी व्यक्ति को ज्ञान, कौशल, मूल्य और व्यवहार सिखाना। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षक अपने अनुभव, जानकारी और योग्यता को विद्यार्थियों तक पहुँचाता है। शिक्षण केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक, नैतिक, सामाजिक और व्यावहारिक विकास से जुड़ा होता है।

शिक्षण का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को सोचने, समझने और सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करना है। इसके माध्यम से विद्यार्थी न केवल विषयगत ज्ञान प्राप्त करता है, बल्कि जीवन जीने के आवश्यक कौशल, सामाजिक मूल्यों और संस्कारों को भी सीखता है। शिक्षण में शिक्षक का मार्गदर्शन, विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और सीखने की रुचि महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षण के माध्यम से सामाजिक प्रगति संभव होती है। यह व्यक्ति को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाता है। आधुनिक शिक्षण में तकनीकी साधनों, अनुभवात्मक शिक्षण और सहयोगात्मक गतिविधियों का उपयोग बढ़ रहा है। शिक्षण का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना नहीं, बल्कि सीखने और सोचने की क्षमता विकसित करना है।

### ऑनलाइन शिक्षण

ऑनलाइन शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें शिक्षा इंटरनेट के माध्यम से दी जाती है। इसमें शिक्षक और विद्यार्थी भौतिक रूप से एक ही स्थान पर नहीं होते, बल्कि डिजिटल प्लेटफॉर्म, वीडियो कॉल, ई–लर्निंग पोर्टल, मोबाइल ऐप या अन्य तकनीकी साधनों का उपयोग करके पढ़ाई होती है। इसे वर्चुअल लर्निंग या ई–लर्निंग भी कहा जाता है।

ऑनलाइन शिक्षण में पाठ्यक्रम (Courses), वीडियो लेक्चर, क्विज, ई–बुक्स और इंटरैक्टिव सामग्री का उपयोग किया जाता है। विद्यार्थी अपनी सुविधा अनुसार समय और स्थान का चयन करके अध्ययन कर सकते हैं।

यह शिक्षण पारंपरिक कक्षा शिक्षण से अलग है क्योंकि इसमें तकनीकी उपकरणों जैसे कंप्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट या मोबाइल का उपयोग अनिवार्य होता है।

## अध्ययन के पदों की व्याख्याः–

सक्ती जिला के ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण के छात्र पर पड़ने वाले प्रभाव काअध्ययनके लिये यह शोध कार्य किया गया है। ये कार्यक्रम छात्र–छात्राओं को स्कूलों और अन्य शैक्षिक कार्य में प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और व्यावहारिक अनुभव से लैस करते हैं। इसमें छात्र–छात्रा दोनों शमिल है।

## संबंधित शोध साहित्य का अध्ययनः–

**R. K. Sharma (1998)** इस अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक शिक्षा की स्थिति का विश्लेषण किया गया। शोध में यह देखा गया कि संसाधनों की कमी, शिक्षकों की संख्या और गुणवत्ता, तथा छात्रों की सीखने की क्षमता पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। डिजिटल शिक्षा का इस समय सीमित प्रभाव था। अनुसंधान ने ग्रामीण छात्रों की शिक्षा तक पहुँच की बाधाओं और सीखने के परिणामों में अंतर को उजागर किया। यह अध्ययन ग्रामीण शिक्षा के आधारभूत ढांचे को समझने में मदद करता है।

**S. P. Singh (1999)** यह शोध ग्रामीण स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता और चुनौतियों का विश्लेषण करता है। इसमें विशेष रूप से पाठ्य सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण और बच्चों की सीखने की क्षमता पर ध्यान दिया गया। डिजिटल शिक्षा इस समय केवल विचारणीय थी। शोध ने यह दर्शाया कि ग्रामीण छात्रों को सीखने की समान अवसर नहीं मिलते थे और पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों में सुधार की आवश्यकता थी।

**Anita Verma (2002)** इस शोध में ग्रामीण छात्रों और शिक्षकों में कंप्यूटर और डिजिटल साक्षरता की जरूरत का मूल्यांकन किया गया। अध्ययन में यह देखा गया कि कंप्यूटर शिक्षण से छात्रों में तकनीकी रुचि बढ़ी, लेकिन उपकरण और प्रशिक्षण की कमी ने प्रभाव को सीमित रखा। अनुसंधान ने ग्रामीण शिक्षा में तकनीकी संसाधनों की भूमिका और उनकी उपलब्धता की समस्याओं को उजागर किया।

**Rajesh Kumar (2004)** यह अध्ययन ग्रामीण क्षेत्रों में कंप्यूटर आधारित शिक्षण और इसके प्रभावों का विश्लेषण करता है। शोध में यह पाया गया कि छात्रों और शिक्षकों को डिजिटल उपकरणों के साथ परिचित करने की आवश्यकता थी।

संसाधनों की कमी और प्रशिक्षित शिक्षक न होने के कारण ऑनलाइन शिक्षण का प्रभाव अभी सीमित था। अनुसंधान ने डिजिटल शिक्षा के प्रारंभिक प्रयोग की चुनौतियों को समझने में मदद की।

**Pooja Mehta (2007)** इस शोध में ग्रामीण स्कूलों में ई–लर्निंग और कंप्यूटर लैब के प्रयोग पर ध्यान दिया गया। अध्ययन में यह देखा गया कि छात्र तकनीकी उपकरणों के साथ सहज हो रहे थे। हालांकि प्रशिक्षित शिक्षक और इंटरनेट की सीमित उपलब्धता सीखने की गुणवत्ता में बाधक थी। अनुसंधान ने डिजिटल शिक्षा के प्रारंभिक लाभ और चुनौतियों को उजागर किया।

**Vikram Singh (2009)** इस शोध में ग्रामीण छात्रों के डिजिटल उपकरणों के उपयोग और ऑनलाइन शिक्षण के अनुभव का अध्ययन किया गया। अनुसंधान में पाया गया कि छात्र तकनीकी साधनों का प्रयोग कर रहे थे, लेकिन नेटवर्क और संसाधनों की कमी से सीखने की क्षमता प्रभावित होती थी। यह अध्ययन ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षा के प्रारंभिक प्रभावों को समझने में महत्वपूर्ण है।

**Sunita Rani (2008)** इस शोध में ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा और कंप्यूटर शिक्षा की चुनौतियों का मूल्यांकन किया गया। अनुसंधान ने यह दिखाया कि छात्रों में सीखने की रुचि बढ़ी, लेकिन शिक्षक प्रशिक्षण, उपकरण और नेटवर्क की कमी ने प्रभाव को सीमित किया। अध्ययन ने यह स्पष्ट किया कि डिजिटल शिक्षा को सफल बनाने के लिए तकनीकी और प्रशासनिक सुधार आवश्यक हैं।

**Shifali Garg (2013)** इस अध्ययन में डिजिटल इंडिया पहल के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया। शोध ने दिखाया कि तकनीकी उपकरणों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने

शिक्षा की पहुँच बढ़ाई, लेकिन शिक्षक प्रशिक्षण और तकनीकी समस्याएँ मुख्य बाधाएँ थीं। अनुसंधान ने यह भी बताया कि छात्रों की सीखने की क्षमता और तकनीकी कौशल में सुधार हुआ।

**Parul Jhajharia (2014)** इस शोध में ग्रामीण छात्रों और शिक्षकों के ऑनलाइन शिक्षण अनुभव का अध्ययन किया गया। अनुसंधान ने यह दिखाया कि मोबाइल और डिजिटल प्लेटफॉर्म शिक्षा की पहुँच में वृद्धि कर रहे हैं। हालांकि तकनीकी कठिनाइयाँ और सामाजिक बाधाएँ ऑनलाइन शिक्षण को पूरी तरह प्रभावी नहीं बना पा रही थीं। अध्ययन ने डिजिटल शिक्षा के लाभ और चुनौतियों पर स्पष्ट निष्कर्ष प्रस्तुत किया।

**Braj Vinod Gautam (2015)** इस शोध में ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा के सामाजिक प्रभाव और महिला सशक्तिकरण पर ध्यान दिया गया। अनुसंधान में पाया गया कि ऑनलाइन शिक्षण ने ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा और तकनीकी साक्षरता में आगे बढ़ाया। हालांकि इंटरनेट, उपकरण और प्रशिक्षित शिक्षक की कमी समस्याएँ बनी रहीं। अध्ययन ने डिजिटल शिक्षा के सामाजिक और शैक्षिक लाभ को उजागर किया।

**Namita Das (2017)** यह शोध ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में मोबाइल और ऑनलाइन लर्निंग के प्रयोग का अध्ययन करता है। अनुसंधान ने दिखाया कि छात्र डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर रहे थे, लेकिन उपकरण, इंटरनेट और प्रशिक्षित शिक्षक की कमी सीखने की गुणवत्ता में बाधक थी। अध्ययन ने ग्रामीण डिजिटल शिक्षा के लाभ और समस्याओं पर प्रकाश डाला।

**Snehaprava Sahoo (2019)** इस शोध में ग्रामीण छात्रों और शिक्षकों के ऑनलाइन शिक्षण अनुभव और चुनौतियों का विश्लेषण किया गया। अनुसंधान ने दिखाया कि डिजिटल माध्यम ने शिक्षा की पहुँच बढ़ाई, छात्रों की तकनीकी कौशल में सुधार हुआ, लेकिन तकनीकी बाधाएँ और प्रशिक्षक प्रशिक्षण अभी भी मुख्य चुनौतियाँ थीं। अध्ययन ने डिजिटल शिक्षा के प्रभाव और सुधार की आवश्यकता पर बल दिया।

**Lopamudra Pati (2018)** इस शोध में ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव और छात्रों की प्रतिक्रिया का अध्ययन किया गया। अनुसंधान ने यह दर्शाया कि छात्रों ने तकनीकी उपकरणों का उपयोग किया और सीखने में रुचि बढ़ी। बावजूद इसके, इंटरनेट, उपकरण और प्रशिक्षक प्रशिक्षण की कमी ने सीखने की गुणवत्ता पर नकारात्मक असर डाला।

**Dr. Chandramoulesh G. K. (2025)** कोविड–19 के बाद ऑनलाइन शिक्षण पर यह अध्ययन हुआ। शोध ने दिखाया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म ने ग्रामीण छात्रों तक शिक्षा की बेहतर पहुँच दी। छात्रों में तकनीकी कौशल विकसित हुआ और लचीले समय की सुविधा मिली। फिर भी इंटरनेट की धीमी गति, उपकरण और प्रशिक्षित शिक्षक की कमी मुख्य समस्याएँ रहीं। अध्ययन ने डिजिटल शिक्षा के वास्तविक लाभ और बाधाओं को रेखांकित किया।

**Dr. Harvinder Kaur Dogra (2025)** यह शोध ग्रामीण उच्च शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव का विश्लेषण करता है। अनुसंधान में पाया गया कि डिजिटल माध्यम ने सीखने की पहुंच और तकनीकी क्षमता बढ़ाई। छात्रों और शिक्षकों ने ऑनलाइन लर्निंग का लाभ उठाया, लेकिन उपकरण, इंटरनेट और प्रशिक्षित शिक्षक की कमी ने प्रभाव को सीमित किया। अध्ययन ने डिजिटल शिक्षा के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर स्पष्ट निष्कर्ष प्रस्तुत किया।

## शोध विधिः–

सर्वेक्षण विधि के तहत माध्यम T –टेस्ट और प्रतिशत मान का प्रयोग किया जाएगा।

## जनसंख्याः–

सक्ती जिले के 10 गॉव (सलिहा भांठा, रैनखोल, दमाऊ धारा, गहरीन मुड़ा, छिंद मुड़ा, बरपाली कलां, जामचुआ, बुढ़नपुर, पतेरापाली, जुनवानी ) ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

## न्यादर्शः–

प्रस्तुत अध्ययन के न्यादर्श का चयन उपर्युक्त जनसंख्या को आधार मानकर किया गया है। अध्ययन की सुविधा हेतु सक्ती जिले के 10 गॉव (सलिहा भांठा, रैनखोल, दमाऊ धारा, गहरीन मुड़ा, छिंद मुड़ा, बरपाली

कलां, जामचुआ, बुढ़नपुर, पतेरापाली, जुनवानी ) ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राओं की ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन के लिए चयन किया गया। प्रत्येक गॉव से 10–10 छात्र व छात्रा का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि के माध्यम से किया गया है। न्यादर्श का विवरण तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

**तालिका संख्या 1**
**ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन।**

| क्र. | गॉव का नाम | विद्यार्थियों का वर्ग | |
|---|---|---|---|
| | | छात्र | छात्रा |
| 1. | सलिहा भांठा | 5 | 5 |
| 2 | रैनखोल | 5 | 5 |
| 3 | दमाऊ धारा | 5 | 5 |
| 4 | गहरीन मुड़ा | 5 | 5 |
| 5 | छिंद मुड़ा | 5 | 5 |
| 6 | बरपाली कलां | 5 | 5 |
| 7 | जामचुआ | 5 | 5 |
| 8 | बुढ़नपुर | 5 | 5 |
| 9 | पतेरापाली | 5 | 5 |
| 10 | जुनवानी | 5 | 5 |
| कुल 100 | | 50 | 50 |

## शोध में प्रयुक्त उपकरणः–
उक्त शोध पत्र में स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

## अध्ययन का परिसीमनः–
1. उक्त शोध पत्र के लिए सक्ती जिला के 10 गॉव का चयन किया गया है।
2. प्रत्येक गॉव से 05 छात्र एवं 05 छात्राओं को लिया गया है।
3. कुल 10 गॉव के छात्रों को लिया गया है।
4. यह अध्ययन केवल ग्रामीण क्षेत्र तक ही सीमीत है ।
5. यह अध्ययन केवल ग्रामीण क्षेत्र में पढ़ने वाले छात्रों के ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव तक ही सीमीत है ।

## आंकड़ों का विश्लेषणः–
संकलित ऑकडों का वर्गीकरण एवं सारणीकरन करने के पश्चात् उनका उपयुक्त विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के प्रकृति के आधार पर सांख्यिकी के रुप में मध्यमान और टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया हैं।

## $H0_1$ –
## ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन।
प्रस्तुत शून्य परिकल्पना के परीक्षण हेतु प्राप्तांकों का विश्लेषण t- परीक्षण के माध्यम से किया गया। प्राप्त परिणामों को तालिका संख्या 01 में दर्शाया गया हैं, तदोपरान्त व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

सारणी–01

ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्य का विवरण''

| क्र. सं. | प्रशिक्षार्थी समूह | संख्या (N) | मध्यमान (M) | मनक विचलन(D.S.) | t- टेबल मान 0.05 पर | t- गणना मान | df | परिणाम |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्र | **50** | 74.53 | 8.63 | 1.98 | 2.98 | 98 | **अस्वीकृत** |
| 2 | छात्राएं | **50** | 69.21 | 9.25 | | | | |

व्याख्याः–

उपर्युक्त तालिका संख्या 01 द्वारा स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि गणना द्वारा **t** का मान **2.98** है जो '0. 05 सार्थक स्तर पर तालिका द्वारा प्राप्त **t** के मान 1.98 से अधिक है।

अतः संबन्धित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन में सार्थक अन्तर पाया गया।

निष्कर्षः–

अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर जो परिणाम प्राप्त हुए है उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन में सार्थक अन्तर पाया गया।

## शैक्षिक निहितार्थ

ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव के लिए अनेक शैक्षिक निहितार्थ हैं जो ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल शिक्षा केवल तकनीकी उपकरणों तक पहुँच ही नहीं बढ़ाती, बल्कि सीखने की गुणवत्ता, छात्रों की तकनीकी दक्षता और आत्मनिर्भरता में भी सुधार करती है। शिक्षा प्रणाली को अधिक उपयोगी सुलभता और भविष्योन्मुखी बनाते हैं। इन निहितार्थों को समझकर ही शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति संभव है। शैक्षिक निहितार्थ किसी शैक्षिक अध्ययन की उपयोगिता से सम्बन्धित है जो शैक्षिक समस्या के समाधान को प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत अध्ययन सक्ती जिले के 10 गॉव के छात्र–छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होता है, किंतु इसके अधिकतम लाभ के लिए तकनीकी प्रशिक्षण, संसाधन उपलब्धता को बढ़ावा देना आवश्यक है।

## संदर्भ ग्रंथ सूचीः–


1. **Garg, Shifali & Jhajharia, Parul (2025)**Pedagogical Impact of Digital Education in Indian Rural Areas.
2. **Ghimire, Bharat (2022).***Blended Learning in Rural and Remote Schools: Challenges and Opportunities.*
   Link: Blended Learning in Rural and Remote Schools: Challenges and Opportunities
3. **Pratiwi, Andiany Retno & Lengkanawati, Nenden Sri** Challenges of Online Teaching in Rural Area (TLEMC)
4. **Kour, Dr. Davinder (2021)** Impact of online teaching during Covid-19 (International Journal of Current Research
5. **Gayatri Bhaisaniya & Dr. Sunita Sharma (2025)** MOOCs & ICT in Future Education (IERJ)